परमार्थ निकेतन ऋषिकेश में आयाजित अन्तराष्ट्रीय योग महोत्सव में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(8 मार्च, 2023)

जय हिन्द!

मंच पर उपस्थित पुज्य स्वामी श्री चिदानंद सरस्वती मुनि जी, आदरणीय साध्वी भगवती जी!

दुनिया के अलग–अलग हिस्सों से आए योग साधक, आध्यात्मिक नेता, योग गुरु!

उत्तराखंड सरकार की ओर से मैं आप सभी का देवभूमि उत्तराखण्ड में, परमार्थ निकेतन ऋषिकेश में हार्दिक स्वागत करता हूँ।

मैं इस योग महोत्सव में सहयोगी बनने के लिए हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भारत सरकार की प्रतिबद्धता और समर्पण के लिए भी अपनी गहरी प्रशंसा और आभार व्यक्त करता हूं।

भारतीय ज्ञान, विज्ञान, कला, संस्कृति के प्रसार के लिए अपने महान समर्पण के लिए एक सच्चे योगी प्रधान मंत्री जी का नेतृत्व देश को मिला है।

हम सब जानते हैं भारत की यह भूमि योग की भूमि है तो उत्तराखण्ड हिमालय योग की उद्गम स्थली है।

जिस तरह उत्तराखंड से गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी पवित्र नदियों का उद्‌गम हुआ और वे पूरे भारत को सिंचिंत करती हैं, उसी तरह उत्तराखंड की इसी धरती से योग की धारा बहती है और न केवल पूरे भारत वर्ष को अपितु पूरी दुनिया को सिंचित कर रही है।

उत्तराखंड योगियों की भूमि है, यहां श्री बद्रीनाथ जी भी योग मुद्रा में विराजमान हैं, नर और नारायण के रूप में वे आज भी तपस्या कर रहे हैं।

उत्तराखंड योगी ऋषि–मुनियों की भूमि है, यहां अगस्त्य, अत्रि, भारद्वाज, वशिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व जैसे वैदिक ऋषियों ने भी योग, साधना, ध्यान और तपस्या की थी।

यहाँ हिमालय के शिखरों पर, पर्वतों की गुफाओं में, नदियों के संगम पर ऋषि–मुनियों ने योगाभ्यास से ज्ञान की उपासना की है।

आज भी इन ऋषियों के आश्रम उत्तराखण्ड में हैं।

आदि जगद्‌गुरु शंकराचार्य जी, स्वामी रामतीर्थ परम हंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी शिवानंद, महर्षि महेश योगी, स्वामी राम की परंपरा यहीं से है।

ऐसे असंख्य महान योगियों की परंपरा है, जिन्होने उत्तराखंड हिमालय को अपनी योग साधना का केंद्र बनाया है।

स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनि जी' भी उसी योग परंपरा के संत हैं। वे योग को पूरे विश्व में ले जा रहे हैं।

स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनि जी' के मार्गदर्शन में यह अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव पिछले 35 वर्षों से आयोजित किया जा रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग महोत्सव का यह पर्व हर साल बढ़ते जा रहा है, फैलते जा रहा है। यह दुनिया भर के देशों के लोगों को जोड़ते जा रहा है।

यही योग की शक्ति है। योग का अर्थ ही है जोड़ना।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के महान प्रयासों से आज '**विश्व योग दिवस'** की घोषणा के बाद से योग पूरी दुनिया को आपस में जोड़ने का काम कर रहा है।

योग विद्या के इस प्रचार–प्रसार में भारत सरकार का भी महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है।

और इसका परिणाम ही है कि इस 35वें अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव में भी भारत सरकार अपना सहयोग प्रदान कर रही है।

भारत सरकार के पर्यटन, संस्कृति और आयुष मंत्रालय इस आयोजन में महत्वपूर्ण सहभागी बने हैं।

हम सब जानते ही हैं कि हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भी अपने आप में एक योगी हैं। उनका योगी जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा है।

'सर्वे सन्तु निरामयाः' सब निरोगी हों, इस भावना के साथ पूरी दुनिया में आज योग स्वस्थ जीवन शैली का एक बड़ा जन आन्दोलन बन चुका है।

देश और दुनिया में आप सभी योग गुरू, विचारक, ऋषि–मुनि–महात्मा, योग की इस महान परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

आप सभी महान योगियों को इस महान कार्य के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

'वसुधैव कुटुंबकम्' 'सर्वे भवंतु सुखिनः' के संदेश को साकार करने के लिए भारत को विश्वगुरु भारत बनना है।

हम भारतीय ज्ञान प्रणाली के बल पर ही हम एक बार फिर से विश्वगुरु बन सकते हैं।

विश्वगुरु भारत एक आध्यात्मिक नेतृत्व है। हमारे पास आध्यात्मिक शक्ति है। ज्ञान की दिव्यता है। विचारों की पवित्रता है।

अध्यात्म की महान परम्परा है, आप सभी योगी उस आध्यात्मिक भारत के नेता हैं।

विश्वगुरु भारत के संकल्प को पूरा करने में योग विद्या का महत्वपूर्ण योगदान होने वाला है।

आप सभी जानते हैं कि योग सभी के लिए सुख–शांति का मार्ग है। यही हमारे स्वस्थ शरीर और दीर्घ जीवन का मार्ग है।

योग हमारी आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग है। योग आत्मा और परमात्मा के मिलन का रहस्यमय साधन है।

योग प्रकृति का मार्ग है, योग पर्यावरण और जलवायु संरक्षण की गारंटी है, योग शांति और एकता का मार्ग है, योग विश्व बंधुत्व का सूत्र है।

योग एक साथ चलने का आह्वान है। विश्व में शांति और समृद्धि आधार है। योग भारतीय ज्ञान की अमूल्य सम्पत्ति है।

इस सम्पत्ति पर सब का अधिकार है। विश्व के 100 से अधिक देशों के योग साधक यहां उपस्थित हैं।

आप दुनियां में भारतीय योग विद्या के ब्रांड अम्बेसडर हैं।

आप सभी को दुनिया में एक बड़ा बदलाव लाना है। स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ जीवन को बनाना है।

आप योग के मार्ग पर चल रहे हैं, आप ही हैं जिन्होने योग के मार्ग पर चल कर विश्व में सुख, शांति और समृद्धि लानी है।

भारत जी20 की अध्यक्षता कर रहा है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की महान भावना का विस्तार कर रहा है।

'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' का जो संकल्प है उसमें योग एक महान साधन बन रहा है।

मैं परमार्थ निकेतन में आये अपने सभी योग साधकों, शिक्षकों और प्रेरकों को धन्यवाद देता हूँ।

योग की यह परंपरा निरंतर बढ़ती रहे, विश्व में शांति हो, मैं इस योग महोत्सव के लक्ष्यों की पूर्णत की कामना करता हूँ।

सभी को हार्दिक बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।